# बेसाख्ता: तहसीन मुनव्वर

हाकी जो खेलते थे नाकाम हो रहे थे
हड़ताल कर रहे थे बदनाम हो रहे थे
और दूसरी तरफ था क्या खुशगवार मौसम
क्रिकेट के सब खिलाड़ी नीलाम हो रहे थे

शैख़ लेता है इम्तिहाँ मौला
मंहगा होने लगा धुंआ मौला
अपनी गाड़ी खड़ी है बत्ती पर
देदे इक तेल का कुआँ मौला

कली उम्मीद की खिल जाये अब तो
कहीं से बीज वह मिल जाये अब तो
बहुत मुद्दत से नफरत उग रही है
इलाही ज़ख्म यह सिल जाये अब तो

किस क़दर ऊँचे मेरे दाम हुआ करते थे
कृष्ण मेरे थे मेरे राम हुआ करते थे
मेरे भारत में फक़ीरों की सदा चलती थी
सूफ़ी संतों से यहां काम हुआ करते थे